August 2023, Issue 7

GENESIS GLOBAL SCHOOL

Promising Futures

THE POLYGLOT

Asha Nozomi, 8B

Edited by: Ria Chaddha
Assisted by: Aneesha Sehgal, Zoya Zoheb
Supported by: The Language Department

FAITES TRAVAILLER VOTRE ESPRIT...

Je suis grand quand je suis jeune et je suis petit quand je suis vieux. Que suis-je ?

Que pouvez-vous casser, même si vous ne le ramassez ou ne le touchez jamais ?

Qu'est-ce qui ne peut pas parler mais répondra quand on lui parlera ?

Plus il y en a, moins vous en voyez. Qu'est-ce que c'est?

Je te suis tout le temps et je copie chacun de tes mouvements, mais tu ne peux pas me toucher ou m'attraper. Que suis je?

Qu'est-ce qui grossit quand on en retire plus?

Quelle invention vous permet de regarder à travers un mur ?

Il vous appartient, mais d'autres personnes l'utilisent plus que vous. Qu'est-ce que c'est?

Que peut-on garder après avoir donné à quelqu'un ?

Une bougie, Une promesse, Un écho, Ténèbres, Votre ombre, Un trou, Une fenêtre, Votre nom, Votre mot

Notre Créativité

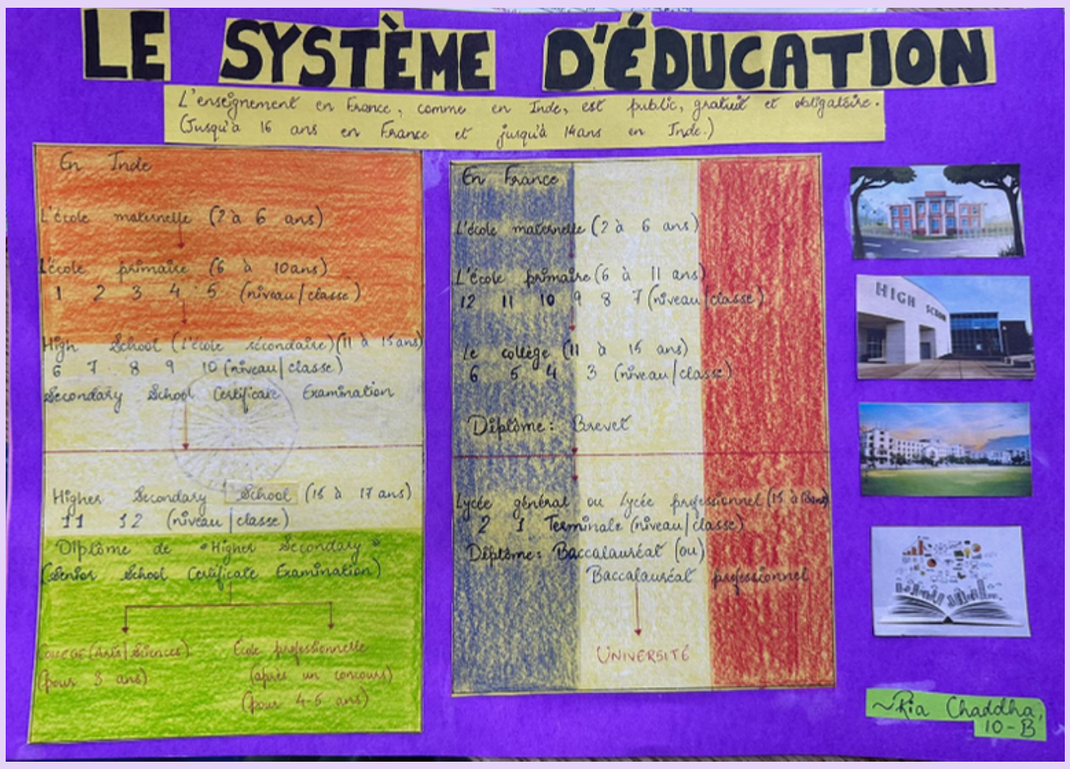

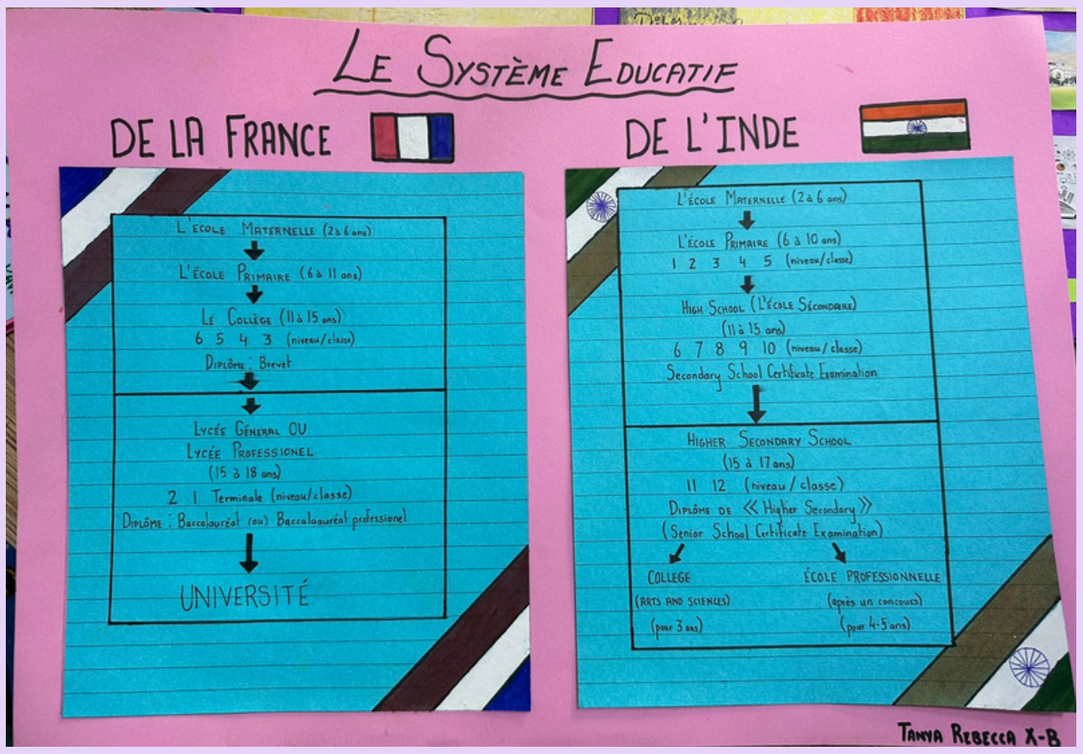

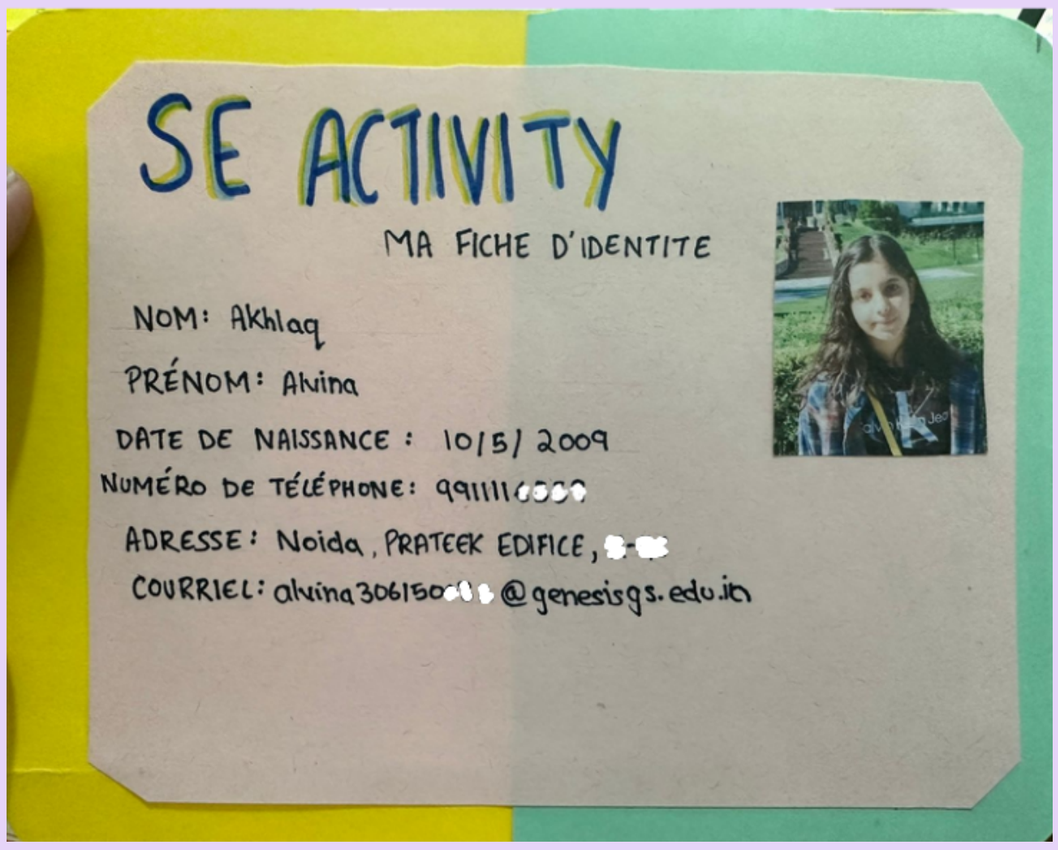

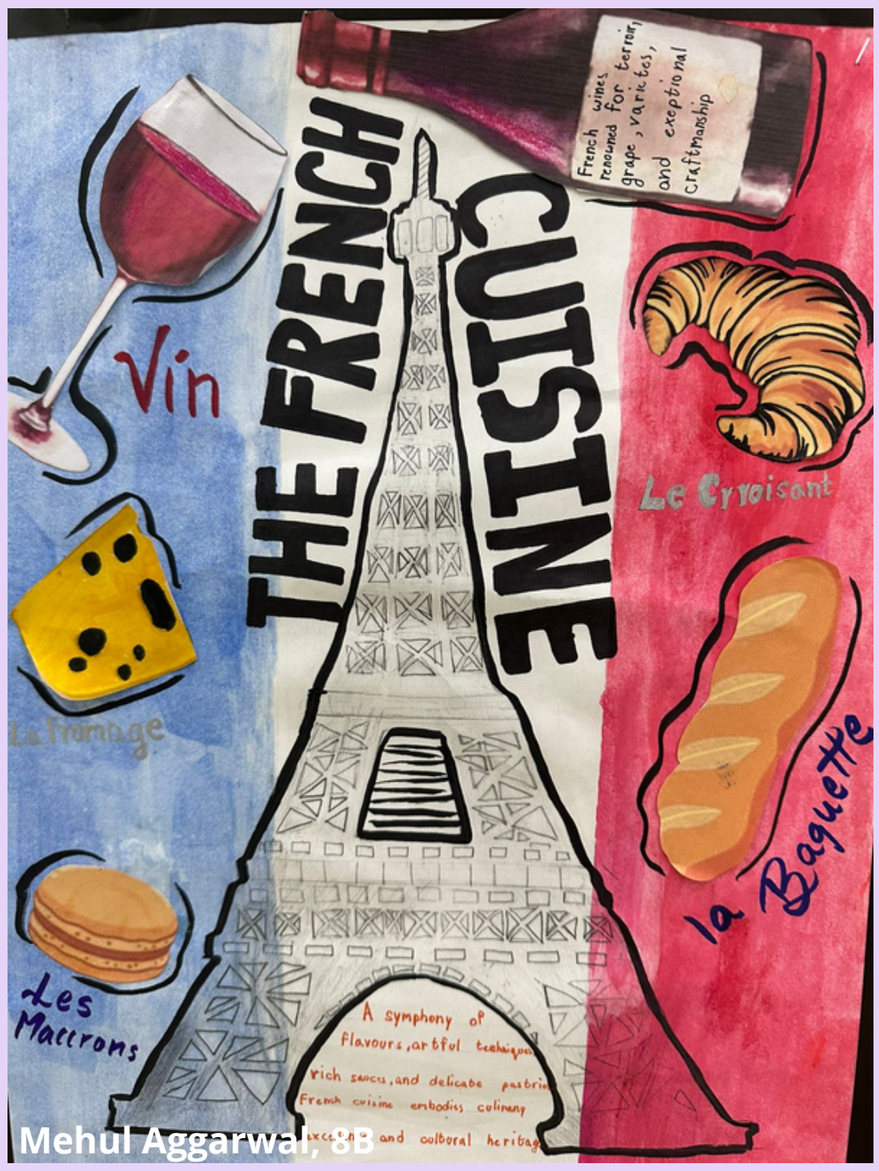

Mehul Aggarwal, 8B

Ishvik, 9A

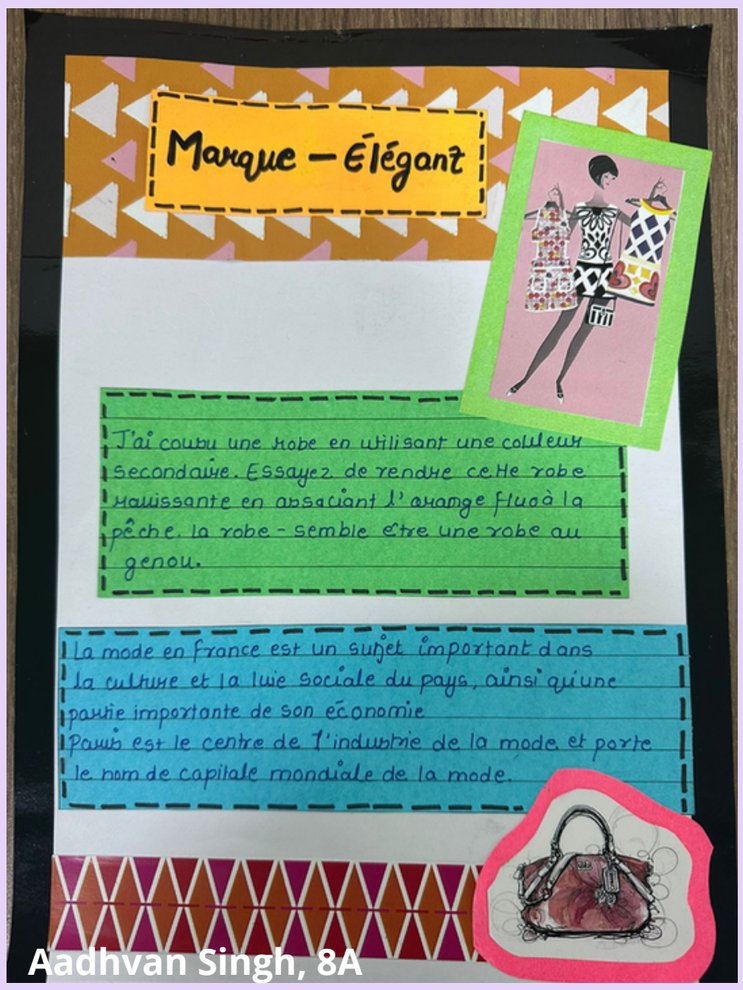

Aadhvan Singh, 8A

LES REPAS

Le Petit Déjeuner:

Pour le petit déjeuner, les Indiens ont du pain avec du beurre et des parathas. Ils boivent du thé ou du café. Les enfants mangent du porridge et des céréales. Ils boivent du lait.

Le Déjeuner:

Au déjeuner, les Indiens mangent souvent au bureau ou au restaurant. Ils mangent des chapatis et des légumineuses avec des légumes. Les enfants mangent aussi du riz avec des légumineuses et des chapatis. Ils mangent également des salades. Les élèves mangent souvent à la cantine de l'ecole.

Le Goûter:

Au thé de l'après-midi, les Indiens prennent du thé ou du café avec des biscuits et des namkeens. Les enfants ont du lait avec des biscuits.

Le Dîner:

Le dîner est un repas très important de la journée. Toute la famille mange ensemble. Ils commencent par des entrées telles que des brochettes. Pour le plat principal, ils prennent du riz, du chapati, du poulet, des légumes, du dal et du poisson. Ils ont aussi un dessert. Les adultes boivent du vin aux repas.

Anwita Kumar, 11A

JAHRESZEITEN IN DEUTSCHLAND

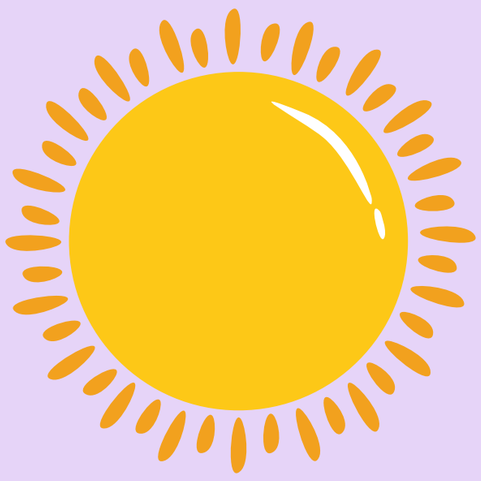

Seit der Antike gibt es viele Jahreszeiten
in Deutschland.
Sommer, Herbst, Winter, Frühling
haben viel Spaß alle jungen Männer.
Obwohl der Sommer sehr heiß ist,
dürfen wir immer noch Eis essen!
Im Herbst fallen viele Blätter.
Der Winter ist jetzt nicht mehr so spät.
Der Winter ist sehr kalt,
aber beliebt bei Jung und Alt!
Im Frühling blühen die Blumen,
jeder genießt und ruht sich aus.
Jede Jahreszeit ist auf ihre Weise gut,
genieße sie und stelle dich ihr mit Mut!

Deepank Saini Sadh, 8B

Mansha Srivastava, 9B

Kreative deutsche Köpfe

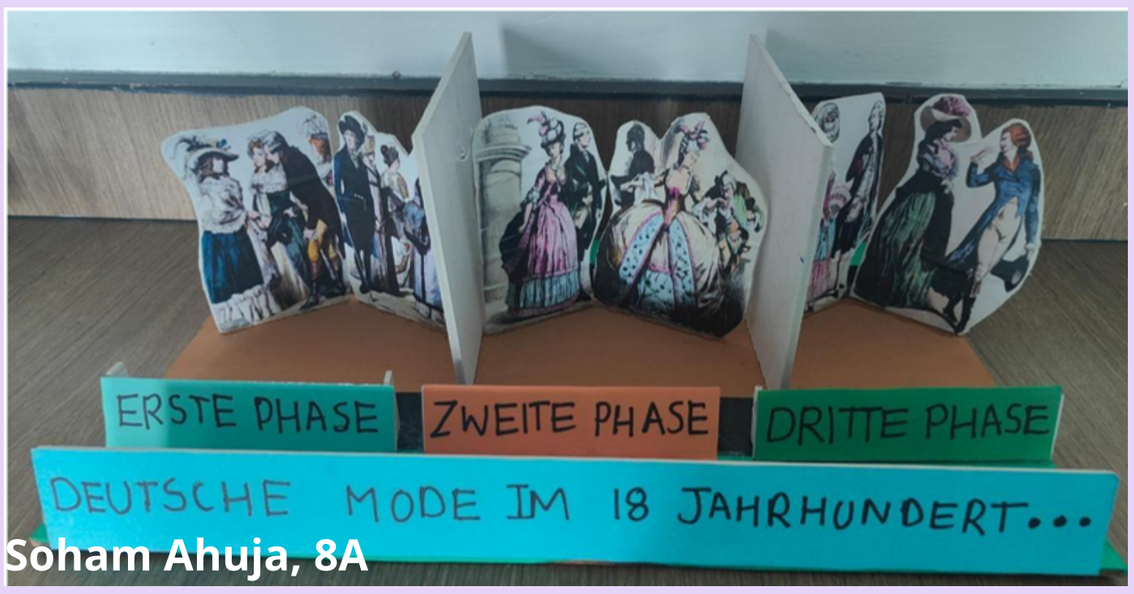

Soham Ahuja, 8A

DEUTSCHE MODE IN 18 JAHRHUNDERT

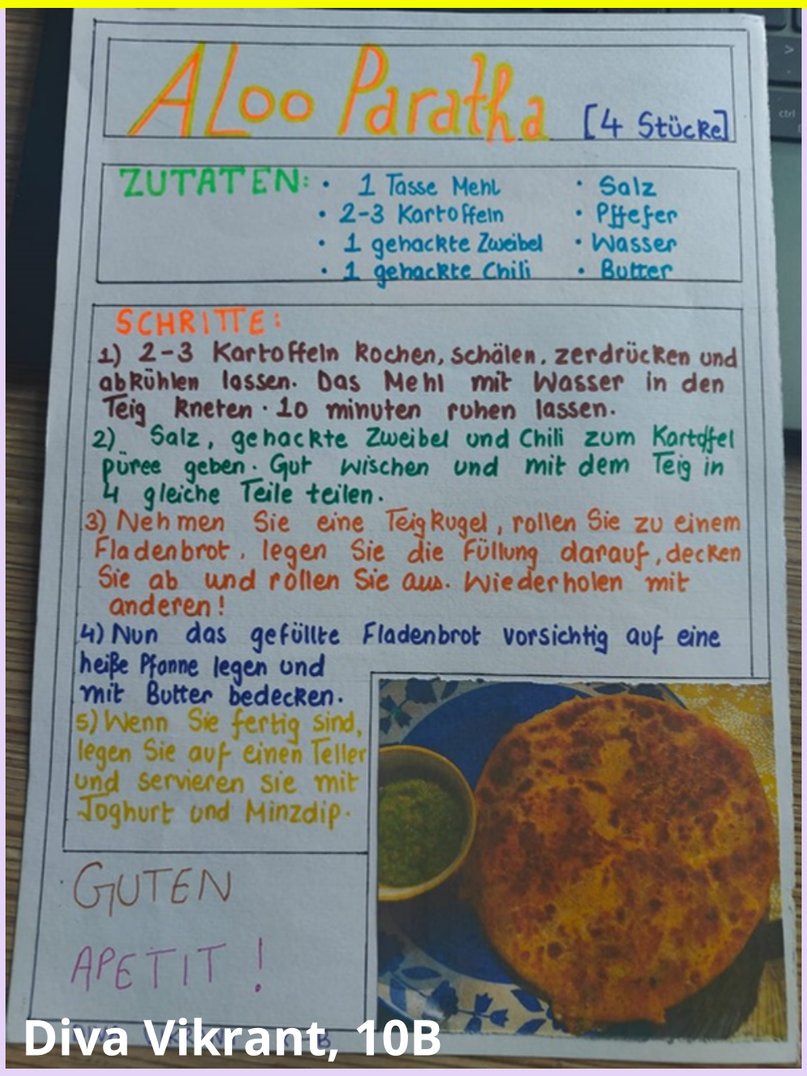

Diva Vikrant, 10B

DEUTSCH SPRECHENDE LÄNDER UND IHRE KOCHKUNST

Soham Ahuja, 8A

Mansha Srivastava, 9B

Vardhaman Gupta, 10B

हिंदी कविताएँ हैं हम लाये

वसुधैव कुटुम्बकं

जब तक जीवन है, जगत में
तब तक जग में है, पानी
जब तक वायु शुद्ध रहती है
सोंधी रहती मिटटी रानी
तब तक मानव का जीवन है
यह सबको तनिक समझाओ
पर्यावरण को मिलकर बचाओ
इस वसुधैव कुटुम्बकं के फ़र्ज़ को निभाओ।

आर्य वत्स, 8 ब

मैं धरती

मैं धरती मुझे न सताओ,
हो सके तो ढेरों पेड़ बचाओ,
मुझसे युद्ध वायु तुम पाओ,
सुख से तुम मुझ पर बस जाओ।

मैं तो हूँ माँ तुम्हारी,
माँ बच्चों की दोस्ती बड़ी पुरानी,
मेरा तुम्हारा रिश्ता है रूहानी,
धरती माँ की यही कहानी।

धरती खून से सनी कितनी बार,
युद्ध यहाँ से बड़े अपार,
किसी ने न सूनी मेरी गुहार,
अब बस बहुत हुआ ये सब ना झेल पाऊँगी,
फिर से सताया मुझे अगर मुझे तो नानी याद दिला दूँगी।

गैलेना भाटी, 6ब

पृथ्वी

यूँ तो है ग्रह छोटा-सा
पर यहीं घटी हर सुनी कथा
सारे जंतु, सारे जीव
सारी सृष्टि यह निर्जीव
सभी महात्मा यहीं उभरते
सारे पापी यहीं हैं मरते
सभी समुद्र, सभी देश
सारे आभूषण, सारे ही वेश
सारी खोजें, बहुत ख़ास और विशेष
कुछ हुए आज़ाद, कुछ रह गये शेष
यहीं जीते हैं, यहीं हारे हैं
यहीं द्वेष है, यहीं प्यार है
हमारे पास तो, एक ही धरा है
उस धरा बिन हम प्राणी क्या हैं?
इसको हम यदि सवारेंगें
हम खुद कुछ लाभ पाएँगें
इस धरा को बचाना फ़र्ज़ हैं मज़बूरी नहीं
इस धरा को बचाना बहुत ज्यादा है ज़रूरी

दीपांक सैनी साध, 8 ब

धरती है ज़रूरी

धरती हमें है खाना देती,
वो देती है हमें पानी,
सब कुक देती जो हम चाहते,
फिर भी हम करते हैं मन मानी
काट देते हम पेड़ों को
पैसों के लालच में
और पेड़ बचाओ हम लिखते हैं
उनसे बने हुए कागज़ पे
गर्मी से बचने के लिए
हम ए.सी हैं लगाते
पर पूरे दिन उसे चलाकर
हम गर्मी हैं बढ़ाते
क्यों फेंक देते हैं सब
अपना कूड़ा पानी में
जबकि कूड़ेदान मिल जाते हैं
बड़ी ही आसानी से
क्यों बाहर जाने से पहले
हम लाइट बंद नहीं करते हैं
क्यों हम अपनी गाड़ी के बजाए
बस का इंतज़ार नहीं करते हैं
क्यों हम करते हैं प्रयोग
प्लास्टिक की थैली का
और क्यों नहीं हम पालन करते
रीयूज़ और रिसाइकिल का
चाँद जिसको हम रोज़ देखते हैं
हम उसपर थोड़ी रहेंगें
हम धरती को ऐसा बनाएँगें
जिसपर हम जी सकेंगें
तो इन पक्तियों से
मैं करती हूँ कविता पूरी
और तुम सब ये ध्यान रखो
हम सबके जीवन के लिए है, धरती ज़रूरी

श्रेयानी राजन, 8 ब

मित्रता एक मिठी सी कहानी है,
अनमोल रिश्ते की निशानी है।

मेरी मित्र

मेरी दोस्त है बहुत प्यारी,
है वह बहुत न्यारी।
जब मैं उससे करती बात,
रहती वह साथ-साथ।
हम दोनों है बहुत विचित्र,
बनाते रहते हैं बस चित्र ही चित्र।
जब मैं यादों का किस्सा खोलूँ ,
तुम्हें अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बोलूँ।

गैलीना भाटी, 6ब

मेरी मित्र है बड़ी विचित्र।
बनाती है वह बहुत अच्छे चित्र।
करना अच्छा लगता है उसे नृत्य।
मेरी मित्र है बड़ी विचित्र।
भाता है उसे रंग नीला।
जब होती है वह गुस्सा, करती है मुँह लाल-पीला।
जब करती है मुझे कॉल, खा रही होती फल रसीला।
पेट भर खाए फिर ए-सी के नीचे आराम फरमाए।
मम्मी के कहने पर भी बाहर न जाए,
मेरे बुलाने पर फटाफट आ जाए।
मेरी मित्र है बड़ी विचित्र।

अनाया घई, 6ब

मित्रता

प्यारा-सा संबंध है मित्रता,
हर सफल रिश्ते की नींव है मित्रता।
मुश्किल समय में साथ देती मित्रता।
हमारे जीवन का आधार है मित्रता,
दिल से निभाया जाता है यह रिश्ता।
मस्ती और प्यार भरी बातें करते हम।
दोस्तों के संग ढेर सारी यादें बुनते ह्म।
कभी खट्टा कभी मीठा एहसास है मित्रता।
दिलों का अटूट विश्वास है मित्रता।

पिया जोशी. 6ब

रचनात्मकता की झलक

बुढ़िया और बच्चा

पुराने समय में आज की तरह आने – जाने के साधन न थे। साधारण लोग पैदल ही यात्रा करते थे। उन्ही दिनों की घटना है।एक बुढ़िया लकड़ी टेकती हुई किसी काम से दूसरे गाँव जा रही थी। गर्मी के दिन थे। दोपहर होते होते धूप तेज़ हो गयी। बुढ़िया को प्यास लगी। थकावट और प्यास के कारण वह आगे न चल पाई और रस्ते के किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ गयी। आते – जाते लोगों से वह पानी माँगती थी , पर उस प्यासी बुढ़िया पर किसी को तरस नहीं आया।

एक बालक ने उस बुढ़िया की आवाज़ सुनी। उसका घर पास में ही था। वह दौड़ कर घर से लोटा भरकर पानी ले आया और बुढ़िया ने पानी पिया। उसकी जान में जान आई। बालक आग्रह करके बुढ़िया को अपने घर ले गया और चारपाई पर बैठाया। बुढ़िया को बहुत आराम मिला। उसने लड़के को अपनी बाहों में ले लिया और बोली, "इतना छोटा होकर भी , तूने मेरी सुनी , तुझे बहुत सारा आशीर्वाद। तू बहुत अच्छा बच्चा है।"

अग्रिम सिंघल, 7अ

संस्कृत की उत्पत्ति

संस्कृत अपने भाषाई वंश को प्रोटो-इंडो-यूरोपियन भाषाओँ में खोजती है। यह एतिहासिक रूप से उन लोगों के लिए खोजा जा सकता है जो आर्य भाषाएँ बोलते हैं , साथ ही इंडो – यूरोपियन भाषाएँ। संस्कृत साहित्य की शुरुवात वेदों के मौखिक या गाए जाने वाले साहित्य से 1500 BCE में हुई। लगभग 1000 BCE में वादिक संस्कृत ने धर्म और शिक्षा की पहली से दूसरी भाषा की ओर संस्करण किया।

पाणिनि

लगभग 500 BCE में प्राचीन विद्वान पाणिनि ने वैदिक संस्कृत के व्याकरण का मानकीकरण किया जिसमें 3,959 नियम शामिल थे। पाणिनि की अष्टाध्यायी संस्कृत के भाषाई विश्लेषण , 'व्याकरण' के जीवित ग्रंथों में सबसे महत्वपूर्ण है , जो उनके नियमों को निर्धारित करता है। पाणिनि ने वह बनाया जो अब शास्त्रीय संस्कृत कहलाता है।

संस्कृत में नाटक

नाटक अंतिम शताब्दी BCE में संस्कृत साहित्य की एक शैली के रूप में प्रकट हुआ। ये आंशिक रूप से वेदों से प्रभावित थे। संस्कृत नाटककारों में भास, अश्वघोष और कालिदास शामिल हैं।

21वी सदी में संस्कृत

1947 में हमारी स्वतंत्रता के बाद , संस्कृत कार्यों की रचना की गयी। सुधर्मा, संस्कृत में लिखा जाने वाला एक दैनिक समाचार पत्र है। इसका उपयोग हिन्दुस्तानी और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में भी किया जाता है। पूजा के समय भी इसका प्रयोग रहता है।

घनाली सिंह, 8ब

नन्हें कलाकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

15 अगस्त 2023 को भारत की स्वतंत्रता का 76वां वर्ष पूरा हो जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 मार्च ,2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में आज़ादी के अमृत महोत्सव का उद्घाटन किया था क्योंकि इसी दिन महात्मा गाँधी ने 'नमक सत्यग्रह' की शुरुआत की थी। यह महोत्सव 15 अगस्त 23 तक चलेगा। आज़ादी के इस अमृत महोत्सव को मनाए जाने के दो मुख्य उद्देश्य हैं। पहला भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों और उपलब्धियों के बारे में आम लोगों को जागरूक करना है। दूसरा देश के विकास और प्रगति में युवाओं की जागरूकता और रूचि में वृद्धि करना। हम सभी का यह सौभाग्य है कि हम स्वतंत्र भारत के ऐतिहासिक काल को देख रहे हैं।

प्रिशा गुप्ता, 9अ

लोककथा (उत्तर प्रदेश की लोककथा)

एक बार एक ब्राह्मण टीला के निवासियों को किसी दूर गाँव से भोजन के लिए निमंत्रण आया। वहाँ के लोग बहुत प्रसन्न हुए और जल्दी-जल्दी दौड़ भागकर उस गाँव में पहुँच गए । वहाँ सबने जमकर भोजन का आनंद उठाया। भोजन करने के बाद सब लोग अपने घर की ओर चल दिए। वे सब पैदल ही चले क्योंकि सवारी तो थी ही नहीं। रास्ते में चावल के खेत लहलहा रहे थे। यह देखकर उनमें से किसी से रहा नहीं गया। सबने आव देखा न ताव और चावल के खेत पर टूट पड़े। हाथ से चावल के बाल अलग करते और मुँह में डाल लेते। उसी रास्ते से शिव और पार्वती गुज़र रहे थे। पार्वती जी ने शिव जी से कहा – ये लोग भोज खाकर आ रहे हैं, फिर भी कच्चे चावल चबा रहे हैं। शिव जी ने पार्वती जी की बात अनसुनी कर दी। पार्वती जी ने सोचा मैं ही कुछ करती हूँ। सोच विचार करने के बाद उन्होंने शाप किया कि चावल की ऊपर छिलका हो जाए। तभी से खेतों में चावल नहीं धान आने लगे।

युग गुप्ता, 9अ

LAS FALLAS

Las Fallas es la fiesta en el sentido puro del arte.Las Fallas son la celebración de la cultura valenciana, del ruido, la música, la luz y el fuego. Es una celebración tradicional que se celebra anualmente en conmemoración de San José en la ciudad de Valencia, España. Los cinco días principales que se celebran son del 15 al 19 de marzo. La falla es un monumento hecho de piezas de caricatura creadas por artistas y artesanos locales que proporciona un comentario sobre los problemas sociales actuales. Las bandas de marcha desfilan por las calles, se celebran comidas al aire libre y se celebran comidas al aire libre y se organizan fuegos artificiales. Cada año, se elige a una Reina Fallas para promover la fiesta durante todo el año, animando a los lugareños y visitantes a participar. s. La Fiesta de Fallas ofrece una oportunidad para la creatividad colectiva y la salvaguardia de las artes y oficios tradicionales. También es una fuente de orgullo comunitario, contribuye a la identidad cultural y mejora la unidad social. En el pasado, la festividad también era una forma de preservar el idioma valenciano cuando estaba prohibido

Aneesha Sehgal, 10B

CUANDO HACE FRÍO

Cuando llega el invierno
yo me tengo que poner
un abrigo , una bufanda
y unos guantes también.

Un gorrito un la cabeza
Y unas botas en los pies,
así estaré calentito
y no me resfriaré.

Agrim Singhal, 7A

NOS GUSTA EL INVIERNO

Nos gusta el invierno,
No sé porque será.
Por la nieve blanca
O por la navidad.

El frio en invierno,
tiene una solución:
el gorro, el abrigo
Y la calefacción.

Manan Mokha, 8B

Kavita Singh, 9B

Ghhanali Singh, 8B

Ishvick Malhotra, 9A

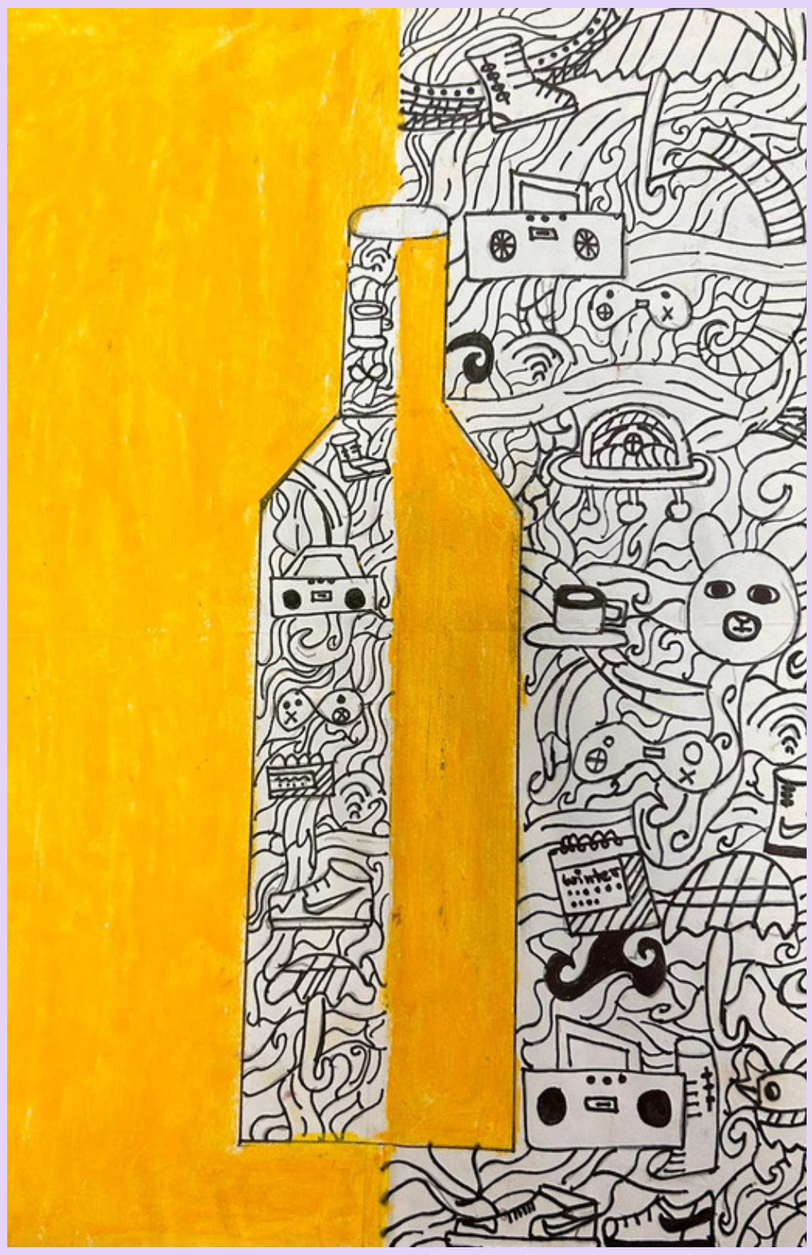

Rudraksh Nagpal, 7A

Naandini Kaprwan, 8A

Gracias

धन्यवाद

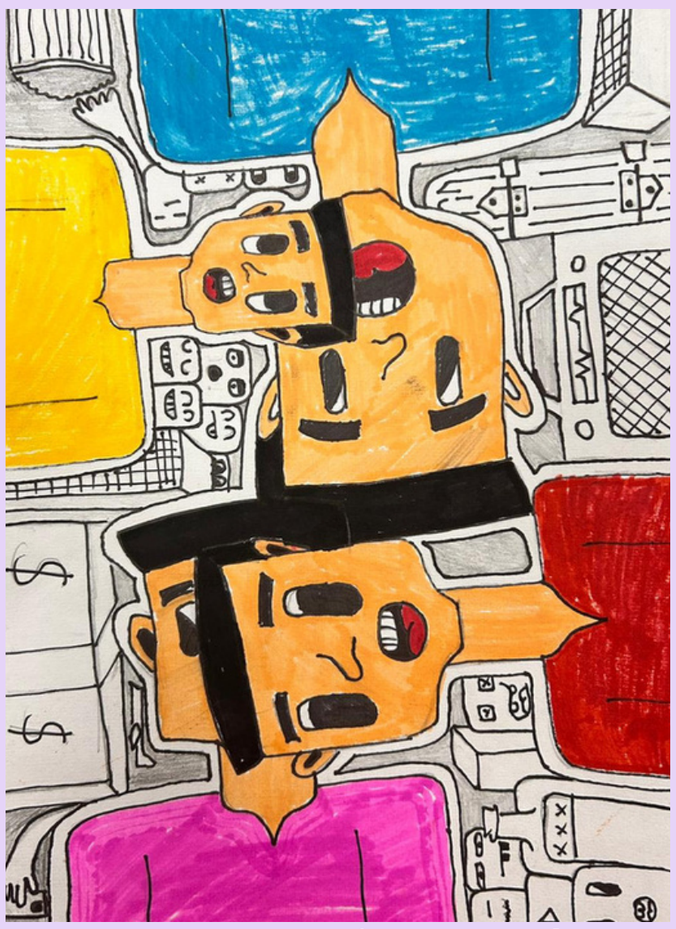

Aarin Agarwal, 9B

Merci

Danke